Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on -- **विजयनगर साम्राज्य का आर्थिक जीवन।** *(for TDC Part 2 HISTORY HONOURS)*

विजयनगर साम्राज्य का आर्थिक जीवन।

आर्थिक स्थितियां:

विजयनगर साम्राज्य भारत में अपने समय का सबसे समृद्ध राज्य था। सभी वस्तुएं प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थीं। उनकी कीमतें कम थीं और जरूरत के मामले में सब कुछ ठीक से और पर्याप्त रूप से संग्रहित रहा। पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी के दौरान विजयनगर का दौरा करने वाले सभी विदेशी यात्रियों ने राज्य और इसके लोगों की संपत्ति और समृद्धि का शानदार वर्णन किया है। अब्दुर रजाक, पेस, बारबोसा,नूनिज, निकोलो कोंटी ने विजयनगर साम्राज्य केआर्थिक स्थिति की प्रशंसा की है।वे कहते हैं कि न केवल राजा और रईस अमीर थे बल्कि आम लोग भी समृद्धि का आनंद लेते थे। आम लोग अपने कान, गर्दन, हाथ, अंगुलियों आदि में गहने पहन सकते थे।

कृषि -: विजयनगर साम्राज्य की समृद्धि कृषि, उद्योगों, व्यापार और वाणिज्य के विकास के कारण थी। भूमि

बहुत उपजाऊ थी; देहात क्षेत्र की अधिकांश भूमि खेती के अधीन थी। अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था। राज्य की ओर से कृषि के विकास के अनेक कदम उठाये गये।जंगल और बंजर भूमि को कृषि योग्य बनाकर कृषि का विस्तार किया गया। सिंचाई की सुविधा के लिये व्यक्तिगत प्रयास किया जाता था। मंदिरों एवं मठों ने भी सिंचाई में महत्वपूर्ण योगदान दिया। चोल काल से प्रचलित काश्तकारी कानून में परिवर्तन कर दिया।बाहरी प्रदेशों से राज्य में बसने वाले को भी भू-स्वामित्व का अधिकार दिया गया। भू-स्वामित्व के अनेक रूप मिलते हैं- भण्डारवाल (राज्य के प्रत्यक्ष नियंत्रण की भूमि), ब्रह्मदेय, देवदेय (ब्राह्मण मंदिरों की भूमि), अमरम् भूमि, कुट्टगि (पट्टे पर दी गई भूमि)। विजयनगर साम्राज्य में 'दूरवासी-भूस्वामित्व' में पर्याप्त संख्या में बढ़ोतरी हुई। बड़े भू-स्वामियों का विकास हुआ, फलतः कृषकों का शोषण हुआ। भूमि के क्रय-विक्रय के साथ-साथ कृषक मजदूर भी हस्तांतरित कर दिये जाते थे। कृषि कार्य में कपास, नीम, चावल, काली-मिर्च, अदरक आदि विभिन्न फसलों की खेती प्रमुख रूप से की जाती थी।

व्यापार वाणिज्य एवं उद्योग -:

वाणिज्य अंतर्देशीय, तटीय और विदेशी था। विजयनगर शहर देश में वाणिज्य की सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र थी। निर्यात की प्रमुख वस्तुएं थीं- वस्त्र, शक्कर, चावल, मसाला, हीरे, इस्पात एवं इस्पात के बने सामान, आदि के व्यापार को आगे बढ़ाया,जबकि आयात मुख्यतः घोड़ों, रेशम, मोती आदि वस्तुओं का होता था। कालीकट मालाबार तट एक महत्वपूर्ण बंदरगाह था। अब्दुर रज़ाक के अनुसार, संपूर्ण साम्राज्य में 300 से अधिक समुद्री बंदरगाह थे। हिंद महासागर, मलाया द्वीपसमूह, बर्मा, चीन, अरब, फारस, दक्षिण अफ्रीका, एबिसिनिया और पुर्तगाल में द्वीपों के साथ वाणिज्यिक संबंध थे। विजयनगर साम्राज्य के मुख्य उद्योग कपड़े, इत्र और विभिन्न प्रकार के बर्तन थे। व्यापारियों और उद्योगों में लगे लोगों को व्यापार और उद्योग के हितों की देखभाल के लिए व्यापार मंडलों में आयोजित किया गया था।

बारबोसा के अनुसार विजयनगर अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का केन्द्र था। इस काल में घोड़े का व्यापार बहुत विस्तृत था और विजयनगर शासकों ने इस संदर्भ में पुर्तगाली

व्यापारियों से संबंध कायम किए। घोड़ों का यह व्यापार मुख्यतः समुद्री मार्ग से होता था। अर्थव्यवस्था में व्यापारिक मेलों की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

साम्राज्य के सिक्के तांबे, सोने और चांदी के थे। सिक्कों पर सुंदर पक्षी 'गैंडाबिरिंडा' लिखा था। विजय नगर शासकों ने सोने, चांदी, तांबे के सिक्के बाराह, पगोडा आदि सिक्के चलवाकर मुद्रा अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन दिया। विजय नगर साम्राज्य में इटालवी मुद्रा फ्लोरीन, डुकाट, पुर्तगाली मुद्रा कुजेड्रो मिली हैं जो अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का प्रमाण हैं।

विजय नगर में अनेक शहर शिल्प, उद्योग व्यापार, बंदरगाह केन्द्र के रूप में सामने आये। कुल मिलाकर अर्थव्यवस्था का स्वरुप विकसित था और इसकी अभिव्यक्ति कला, स्थापत्य के क्षेत्र में देखी जा सकती है।

References: Internet & Competitive books.